8. महाजनपद के महानगर

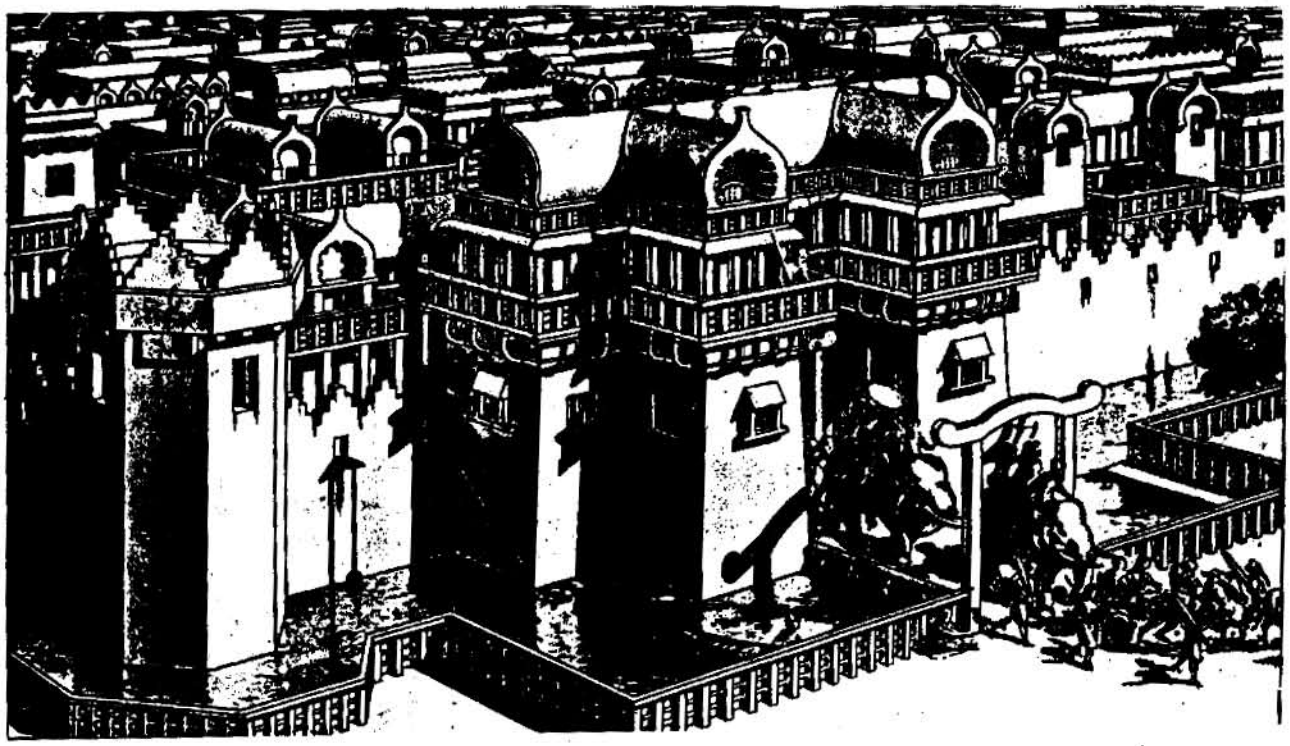

महाजनपदों के महानगरों के चित्र देखो और अंदाज़ से बताओ कि चित्रों में दिख रहे लोग कौन-कौन हैं? नगरों में रहने वाले लोगों की कुछ समस्याएं बताओ। क्या तुम्हें लगता है कि ये समस्याएं महाजनपदों के महानगरों में भी रही होंगी?

कारीगर बने, व्यापारी बने, शहर बसे

महाजनपदों का समय बड़े-बड़े बदलावों का समय था। तुमने पिछले पाठ में पढ़ा था कि राजा शक्तिशाली हो रहे थे और वे सैनिकों व अधिकारियों को रखने लगे थे। वे खेती करने वालों से नियमित रूप से बलि लेने लगे थे। इन बातों का असर और दूसरी बातों पर भी पड़ रहा था।

लोगों से नियमित बलि लेने के कारण राजाओं के पास धन इकट्ठा होता गया। उनके साथ उनके रिश्तेदार, सेनापति और अधिकारी भी धनी होते गये। वे सब इस धन से अपनी शान बढ़ाना चाहते थे। वे अच्छे हथियार, गहने, बर्तन, कपड़े और सुन्दर महल चाहते थे।

कई खेती करने वाले परिवार भी धनी हो रहे थे। वे भी अपने लिए अच्छी व सुन्दर चीज़ें चाहने

लगे। धनी लोगों की तरह-तरह की चीज़ों की मांग को देखकर कई हुनर वाले लोगों ने खेती का काम छोड़ दिया। वे अब बर्तन, गहने, हथियार, कपड़े आदि बनाने लगे और इन चीज़ों को बेचकर अपना गुज़ारा करने लगे। इस तरह कारीगर बने। किसी बस्ती में कपड़ों की अच्छी बुनाई होने लगी, किसी बस्ती में मज़बूत हथियार बनने लगे, किसी और जगह दूर देशों से सोना, मणि आदि मंगवाकर गहने बनने लगे।

पर, जगह-जगह बनी चीज़ों को अलग-अलग जगहों में रहने वाले धनी लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी था। कुछ लोगों ने सोचा, "क्यों न हम कारीगरों से उनके द्वारा बनाई गई चीज़ें खरीदें और दूसरी जगहों पर ले जा कर बेचें? अगर सस्ते में खरीदेंगे और महंगे में बेचेंगे तो हम अपना धन बढ़ा सकेंगे।" इस तरह व्यापारी भी बने। व्यापारियों को उन दिनों **सेट्ठी** कहते थे।

राजा और उसके अधिकारी जहां रहने लगे, वहीं कारीगर और व्यापारी भी बसने लगे। धीरे-धीरे राजा की बस्ती बढ़ती गई और बड़ा शहर बन गई। बहुत बड़े शहरों को **महानगर** कहा जाता था।

नक्शे में देख कर उस समय के महानगरों के नाम बताओ।

नक्शे में दो लम्बी सड़कें बनी हैं - एक उत्तर की ओर जाने वाली **उत्तरापथ** और दूसरी दक्षिण की ओर जाने वाली **दक्षिणापथ** व्यापारी इन मार्गों से यात्रा करते थे और एक नगर से दूसरे नगर जा कर व्यापार करते थे।

इन दोनों सड़कों पर पड़ने वाले महानगरों के नाम सूची में लिखो -

उत्तरापथ के नगर -

दक्षिणापथ के नगर -

उन दिनों होने वाली नई बातों में दो और चीज़ें थीं। व्यापार बढ़ने के कारण **सिक्कों** का इस्तेमाल शुरू होने लगा था।

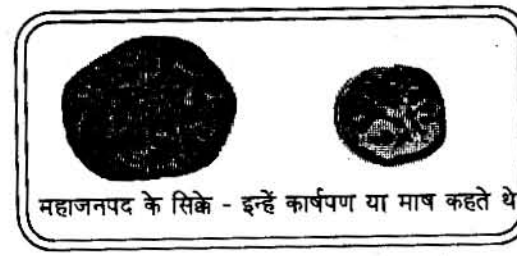

महाजनपद के सिक्के - इन्हें कार्षपण या माष कहते थे

यही नहीं व्यापारियों को हिसाब-किताब रखना पड़ता था। दूर-दूर तक संदेश व खबरें भिजवानी पड़तीं थीं। राजा और उसके अधिकारियों को भी बलि का पूरा हिसाब- किताब रखना पड़ता था। इस कारण उन दिनों **लिखाई** की शुरुआत भी हुई।

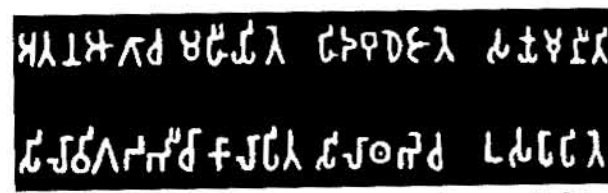

महाजनपद के समय की लिखाई

तुमने शिकारी मानव के बारे में पढ़ा था। उन दिनों शहर क्यों नहीं बस सकते थे -तीन कारण लिखो।

महानगरों में ग़रीब लोग

शहरों में राजा, मंत्री, सेनापति, व्यापारी जैसे धनी लोग रहने लगे थे। उन शहरों की चमक-दमक, चहल-पहल से आस-पास के गांवों के धनी किसान भी शहरों में बसने लगे। धनी लोगों के शहरों में

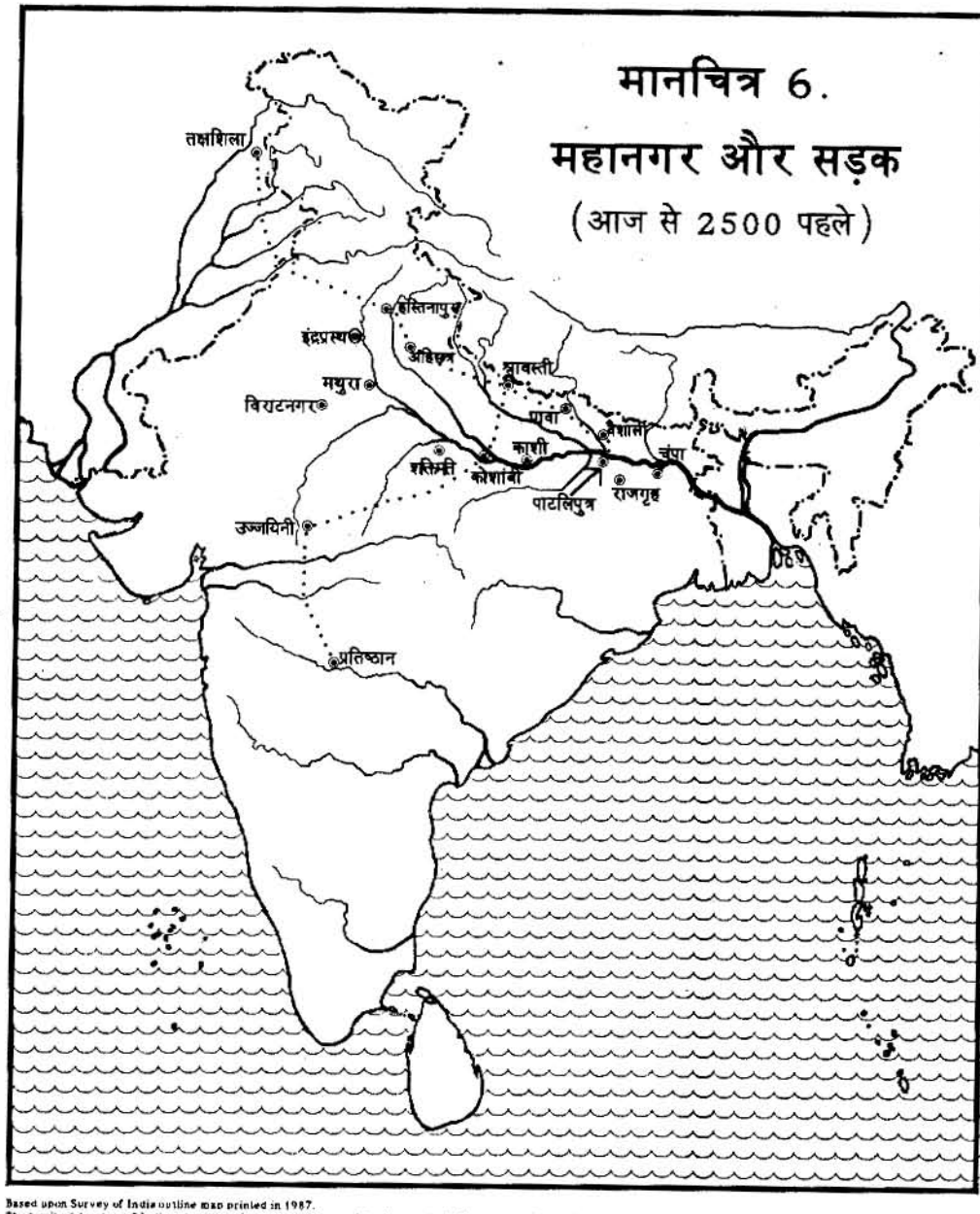

मानचित्र 6.
महानगर और सड़क
(आज से 2500 पहले)

Based upon Survey of India outline map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. © Government of India copyright, 1987.

पैमाना - 1 से.मी. = 200 कि.मी.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—·—
सागर	〰〰
महानगर	●
सड़क	• • • • •

बसने से घर-बाहर के तरह-तरह के काम निकलने लगे। जैसे साफ-सफाई करना, पानी भरना, बर्तन धोना, फूल माला बनाना, सड़कों की सफाई करना, व्यापारियों के लिए भी हम्माली करना.... । कुछ लोग इन कामों को करने लगे। इस तरह शहरों में अमीरों के साथ-साथ ग़रीब लोग भी बसते गए। ये लोग अमीरों की सेवा करके गुज़ारा करते थे।

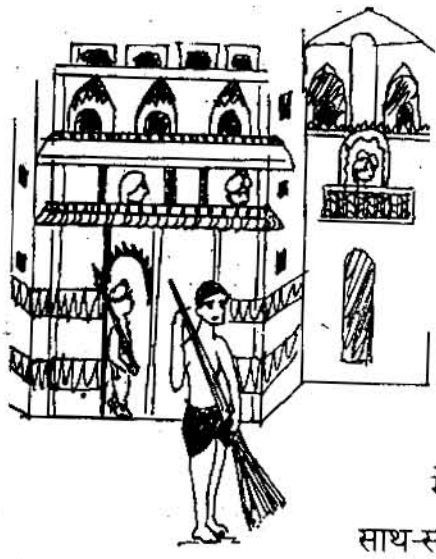

गांवों में गरीब लोग

गांवों में कई बातें बदल गई थीं। कुछ लोगों ने बड़ी-बड़ी ज़मीनें अपने अधिकार में ले ली थीं। ये लोग गृहपति कहलाते थे। उनके सामने अपने बड़े-बड़े खेतों में काम करवाने की समस्या थी। इसके लिए उन्होंने दूसरे लोगों को अपना नौकर बनाया और उनसे अपनी ज़मीन पर मज़दूरी करवानी शुरू की। ये मज़दूर **कर्मकार** कहलाते थे। **दासों** से भी घर व खेत पर काम कराया जाता था।

गृहपति अपने खेतों पर इतना अनाज पैदा करवा लेते थे कि शहरों में बेचने के लिए लाने लगे। शहरों में व्यापारी अनाज खरीद लेते और शहर के लोगों को बेचते।

निर्धन लोग शहरों में क्या-क्या करते थे?
गांव में गृहपतियों को मज़दूरों की ज़रूरत क्यों पड़ी?
शहर में रहने वालों को अनाज कैसे मिलता था?

पैसे का खेल

महानगरों के समय में व्यापार के बढ़ने के कारण सिक्को-पैसों का चलन भी शुरू हो चुका था। पैसों से सब कुछ खरीदा जा सकता था। तरह-तरह की चीज़ें, नौकर-चाकर, गुलाम - सब कुछ पैसा देने पर मिलता था। जिसके पास पैसे नहीं हों उसको पूछने वाला कोई नहीं था।

ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने के लालच में लोग एक दूसरे से झूठ बोलने, एक दूसरे को ठगने व धोखा देने लगे थे और चोरी भी करने लगे थे। पुराने समय में जन के लोग एक दूसरे की मदद करते थे। एक दूसरे पर **भरोसा** करते थे और एक साथ मिल कर गुज़ारा करते थे। ऐसी बातें अब खत्म हो चलीं थीं।

उन दिनों लोगों का जीवन कैसा था, लोग क्या चाहते थे, क्या-क्या सोचते थे - ये जानने के लिये हम उन दिनों की कुछ कहानियां पढ़ेंगे।

कहानी - रंगू का सिक्का

कोसल महाजनपद की राजधानी श्रावस्ती के एक कोने में एक छोटी सी झोपड़ी थी। इसमें रंगू और बासंती साथ रहते थे। रंगू पानी भरने का काम करने वाला **भिश्ती** था। वह रोज़ कुएं से पानी भर कर बाज़ार की दुकानों में पानी देता था।

बाज़ार में आये प्यासे लोगों को पानी पिलाता था। बासंती फूल मालायें बना कर अमीरों के घरों में बेच आती थी। रंगू और बासंती बहुत ग़रीब थे। वे रोज़ पेट भर खा भी नहीं पाते थे।

एक बार रंगू को सड़क पर चांदी का एक सिक्का पड़ा मिला था। उसने उस सिक्के को बचा कर रखा था। बस यही उसका धन था!

अनाथपिंडिक का कारवां

एक दिन रंगू बाज़ार में दुकानों पर रखे मटकों में पानी भर रहा था। देखते-देखते दस-पंद्रह बैलगाड़ियां और पांच-छः ऊंट बाज़ार में आ कर रुके। गाड़ी और जानवर सामान से लदे हुए थे। पूरे बाज़ार में हलचल मच गई कि 'सेठ अनाथपिंडिक का कारवां आ गया है।' अनाथपिंडिक श्रावस्ती नगर के बड़े व्यापारियों में से था। कई सारे मज़दूर और हम्माल उसकी गाड़ियों से सामान उतारने लगे। गाड़ीवान सफर का थकान दूर करने एक ओर बैठ गए।

रंगू ने गाड़ी हांकने वालों को पानी पिलाया। फिर वह उनके साथ एक पेड़ के नीचे बैठ कर बातें करने लगा। एक गाड़ीवान यात्रा की कहानियां सुनाने लगा। उसने बताया कि कैसे वे तक्षशिला से चले थे और कई नगरों से होते हुये श्रावस्ती आये हैं। यह भी बताया कि सेठ ने क्या-क्या खरीदा और क्या-क्या बेचा है।

रंगू ने पूछा, "क्या तुमने भी उन शहरों से कुछ खरीदा है?" गाड़ीवान की आंखें चमक उठीं। वह बोला, "हां यह ज़री का कपड़ा खरीदा है। हमारे दानी सेठ ने कुछ पैसे दिये थे। सो

हस्तिनापुर के बाज़ार में यह कपड़ा खरीदा है। कैसा लगा?" रंगू बोला, "बहुत अच्छा! तुम्हारा भाग्य अच्छा है जो अनाथपिंडिक जैसा मालिक मिला।"

गाड़ीवान ने जवाब दिया, "अभी तो सेठ का स्वभाव अच्छा ही लग रहा है। पर क्या भरोसा। कहीं काली की मालकिन जैसा न निकले।" तब गाड़ीवान ने रंगू को काली की मालकिन की कहानी सुनाई।

मालकिन की परीक्षा

श्रावस्ती शहर में ही विदेहिका नाम की एक अमीर औरत रहती थी। वह सबसे अच्छा **व्यवहार** करती थी। लोगों का कहना था कि वह कभी किसी से गुस्सा नहीं होती थी। सब दूर उसके अच्छे व्यवहार की प्रशंसा होती थी।

विदेहिका के घर में काली नाम की एक दासी काम करती थी। वह खाना बनाती थी, बर्तन मांजती थी, कपड़े धोती थी, झाड़ू-पोंछा लगाती थी और घर के अन्य काम बहुत लगन से करती थी। उसने कभी भी अपनी मालकिन को किसी शिकायत का मौका नहीं दिया।

काली एक दिन सोचने लगी, क्या मालकिन सचमुच इतनी अच्छी औरत है? मैं उसका सब काम कर देती हूं और खूब सेवा करती हूं। शायद इसलिए उसे गुस्सा होने की ज़रूरत नहीं पड़ती।' उसने अपनी मालकिन की परीक्षा लेने की सोची।

एक दिन वह देर से सो कर उठी। उसकी मालकिन ने नाराज़ हो कर उसे देखा और देर से उठने का कारण पूछा। अगले दिन भी काली देर से उठी। उसकी मालकिन को गुस्सा आया और उसने काली को खूब डांटा।

पर, काली उसकी और परीक्षा लेना चाहती थी। अतः वह तीसरे दिन फिर देर से उठी। उसकी मालकिन को उस दिन इतना गुस्सा आया कि एक लोहे की छड़ से काली के सिर पर मार दिया। काली के सिर से खून बहने लगा। वह समझ गई कि उसकी मालकिन वास्तव में शांत **सुशील** और सरल स्वभाव की नहीं है। जब तक काली सारे काम नियम से करती रही तो मालकिन शांत थी। जब वह देर से उठने लगी तो वह गुस्से में आ कर मारने लगी।

कहानी सुनकर रंगू ने गाड़ीवान से कहा, "सही कहते हो भैया। सेठ, गृहपति, जैसे बड़े लोग दास-कर्मकारों को कुछ समझते ही नहीं हैं।"

रंगू क्या काम करता था?

गाड़ीवान ने क्या खरीदा था? उसे पैसे कैसे मिले थे?

गाड़ीवान ने रंगू को 'मालकिन की परीक्षा' कहानी क्यों सुनाई?

अगर मालकिन के घर पर काम करने के लिए कोई दासी नहीं होती तो क्या वह सबसे अच्छा व्यवहार करती?

नक्शा देख कर बताओ कि सेठ अनाथपिंडिक का कारवां तक्षशिला से किन-किन शहरों से होते हुए श्रावस्ती पहुंचा होगा?

बाज़ार में रंगू

गाड़ीवान के पास ज़री का कपड़ा देख कर रंगू की बहुत इच्छा हुई कि वह भी बासंती के लिए कुछ खरीदे। मगर उसके पास पैसे कहां थे? फिर उसे अचानक याद आया कि उसके पास एक सिक्का रखा है। वह बहुत खुश हो गया। वह तेजी से दौड़ता हुआ गया और घर से सिक्का निकाल लाया। सिक्के को लेकर वह बाज़ार गया।

घूमते-घूमते उसे एक सुनार की दुकान नज़र आई। उसने सोचा शायद एक छोटी सी अंगूठी मिल जाएगी। सुनार के पास सुन्दर-सुन्दर गहने थे। मगर सुनार की सब चीज़ें महंगी थीं। रंगू को अपनी मूर्खता पर **झेंप** आई। सिर नीचा किए वह दुकान से निकल आया।

वह चाहता था कि बासंती के लिए ज़री का कपड़ा खरीदे। वह एक कपड़ा व्यापारी के पास गया। उसके पास बहुत सारे कीमती कपड़े थे। व्यापारी ने बताया, "यह जरी का कपड़ा काशी नगर से आया है। इसकी कीमत है - पांच सिक्के। यह रंगीन सूती कपड़ा उज्जयिनी से आया है। इसकी कीमत है दो सिक्के।" रंगू के पास तो सिर्फ एक सिक्का था। वह दुखी हो कर वहां से निकलने लगा।

कपड़े की दुकान पर एक नौकर काम कर रहा था। रंगू का उतरा हुआ मुंह देख कर वह उससे बातें करने लगा। रंगू ने उसस कहा, "ऐ भैया कुछ तरीका तो बताओ कि थोड़े पैसे कमा सकूं।" दुकान के नौकर ने हंस कर कहा, "आजकल लोग कैसे पैसा कमा रहे हैं, लो सुनो।" फिर उसने यह कहानी सुनाई।

कुटिल व्यापारी

काशी महाजनपद में दो व्यापारी रहते थे। एक गांव में रहता था और एक नगर में रहता था। दोनों की आपस में अच्छी दोस्ती थी।

एक बार गांव वाले व्यापारी ने हल के 500 लोहे के फाल नगर वाले व्यापारी के पास रखवा दिए और वह खुद व्यापार के काम से दूसरी जगह चला गया।

शहर वाले व्यापारी ने हल के फालों को बेच दिया और पैसे अपने पास रख लिए। फाल जहां रखे थे वहां उसने चूहों की मेंगनें फैला दीं।

समय बीतने पर गांव वाले व्यापारी ने आकर कहा, "मेरे फाल दे दो।" कुटिल व्यापारी ने चूहे की मेंगनें दिखा कर कहा, "तेरे फालों को चूहे खा गए।"

दूसरा समझ गया कि कुटिल व्यापारी उसे धोखा दे रहा है। उसने कहा, "अच्छा खा गए सो खा गए, चूहों के खा लेने पर क्या किया जा सकता है?" ऐसा कह वह नहाने को चला और कुटिल व्यापारी के बेटे को अपने साथ ले गया। वह एक दूसरे मित्र के यहां गया और लड़के को वहां बिठा कर अपने मित्र से बोला, "इसे कहीं जाने नहीं देना।" फिर, वह नदी पर नहाया और कुटिल व्यापारी के घर पहुंचा। कुटिल व्यापारी ने पूछा, "मेरा बेटा कहां है?"

वह बोला, "मैं तेरे बेटे को नदी किनारे बैठा कर डुबकी लगा रहा था। एक चिड़िया आई और तेरे पुत्र को पंजों में ले आकाश में उड़ गई। मैने हाथ पीटे, चिल्लाया, बहुत कोशिश की लेकिन तब भी उसे न छुड़ा सका।"

कुटिल व्यापारी गुस्से में बोला, "तू झूठ बोलता है। चिड़िया बच्चों को ले कर नहीं जा सकती।"

"अरे दोस्त, चिड़िया तो बच्चों को ले कर आकाश में नहीं उड़ सकती तो क्या चूहे लोहे की फाल खा सकते हैं?" व्यापारी ने कहा।

तब कुटिल व्यापारी की अक्ल ठिकाने लगी और उसने पांच सौ लोहे के फाल के पैसे दूसरे व्यापारी को लौटाए। फिर दूसरे व्यापारी ने उसका बेटा उसे लौटाया।

रंगू बासन्ती के लिए कोई अच्छी चीज़ खरीदना चाहता था, इसके लिए उसके पास पैसे कहां से आये?

रंगू ने क्या-क्या खरीदने की कोशिश की और वह खरीद क्यों नहीं पाया?

व्यापारी ने अपने दोस्त के साथ क्या चालाकी की?

दोस्त ने चालाक व्यापारी से अपने पैसे कैसे वसूल किए?

कुटिल व्यापारी की कहानी रंगू को किसने सुनाई और क्यों?

रंगू ने कटोरा खरीदा

कुटिल व्यापारी की कहानी सुन कर रंगू को हंसी आई। उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह फिर बाज़ार में घूमने लगा। उसने सोचा दूर के नगरों से आई चीज़ें तो महंगी होंगीं ही। चलो श्रावस्ती के कारीगरों से ही कुछ खरीदते हैं। कई जगह घूम कर आखिर में रंगू एक कसेरे के पास पहुंचा। उसकी दुकान में तांबे, पीतल व कांसे के तरह-तरह के बर्तन रखे हुए थे। उसे एक तांबे का कटोरा पसंद आया।

रंगू ने भाव पूछा तो कसेरे ने बताया, "तीन सिक्के में दो कटोरों की जोड़ी मिलेगी।" अब रंगू के पास तो एक ही सिक्का था। रंगू ने कसेरे से बहुत कहा कि वह एक कटोरा एक सिक्के में दे दे। कसेरे ने कहा, "मगर तांबा इतना कीमती है। इसे हम राजगृह से मंगवाते हैं। मैं कीमत कैसे कम करूं?"

काफी देर रंगू उसे भाव कम करने को कहता

रहा। अंत में कसेरे ने कहा, "अच्छा तुम एक काम करो। अभी कुछ देर में सेठ अनाथपिंडिक यहां बर्तन खरीदने आने वाले हैं।

"तुम इन बर्तनों को साफ करके रख दो। फिर मैं तुम्हें कटोरा एक सिक्के में ज़रूर दे दूंगा।"

रंगू ने बड़ी मेहनत से बर्तन साफ करके रखे। तभी सेठ अनाथपिंडिक घोड़े पर चढ़ कर वहां आ पहुंचा। कसेरे ने उसे माल दिखाया। फिर अनाथपिंडिक ने अपनी पोथी निकाल कर हिसाब-किताब देखा। वह कसेरे से बोला, "आपको मैं आधा रकम पहले ही दे चुका हूं। बाकी की रकम यह लीजिए।" यह कह कर सेठ ने कसेरे को चांदी के सिक्के दिए।

इतमें में बैलगाड़ी आई और रंगू ने टोकरियों में बांधकर बर्तन गाड़ी में लाद दिये। फिर रंगू ने अपना एक सिक्का कसेरे को दिया और तांबे का कटोरा लेकर खुशी-खुशी घर चला।

वाक्य पूरे करो -

कसेरे ने रंगू को एक सिक्के में कटोरा नहीं बेचा क्योंकि ———।

रंगू को कटोरा खरीदने के लिए ——— करना पड़ा।

पोथी में सेठ ने ——— रखा था।

रंगू और बासंती के सवाल

रंगू ने घर पहुंच कर बासन्ती को तांबे का कटोरा दिया। वह बहुत खुश हुई। पर, रंगू विचारों में डूबा हुआ था। बासन्ती ने उसके सोचने का कारण पूछा। रंगू ने बताया, "सबने कोई न कोई रास्ता निकाला है। मुझे क्या करना चाहिये?"

बासन्ती ने पूछा, "कैसा रास्ता?" रंगू ने कहा, "कुटिल व्यापारी ने पैसा कमाने के लिए दोस्त को धोखा दिया और झूठ बोला, क्या वैसा मैं करूं? गाड़ीवान ने अपने मालिक की दया पर भरोसा किया - पर काली ने परीक्षा लेकर दिखा दिया कि मालिक पर भरोसा नहीं कर सकते।"

बासन्ती ने कहा, "हां, और अपने पास भूले-भटके मिला एक सिक्का था, सो खर्च कर दिया। क्या हम इसी तरह भाग्य पर भरोसा करें? क्या दुख दूर करने का और भी कोई रास्ता है?"

यह कहकर बासन्ती भी सोच में डूब गई। थोड़ी देर बाद वह बोली, "आज मैं जिस वन में फूल चुनने गई थी वहां कई परिव्राजक ठहरे हुए हैं। वे इसी तरह की बातों पर चर्चा कर रहे थे। उन्हें सुनने शहर के बहुत लोग जमा थे। क्या हम भी जा कर सुनें?"

रंगू चहक कर बोला, "हां, चल चलते हैं।"

* * * * * * *

अभ्यास के प्रश्न

1. मानचित्र 6 देख कर बताओ कि महाजनपदों के समय बसे हुए कौन से महानगर आज भी हैं? आज उन शहरों में महाजनपद के समय की क्या चीज़ें बची हुई मिल सकती हैं?
2. गृहपति जो अनाज बेचते थे वह शहरों में किस-किस के काम आता था?
3. सरमा के पिता की कहानी तुमने पशुपालक आर्य पाठ में पढ़ी थी। सरमा के पिता की स्थिति और श्रावस्ती नगर के रंगू की स्थिति में क्या-क्या फर्क दिख रहे हैं? तुलना करके समझाओ।
4. यहां बहुत सी बातें लिखी हैं। और नीचे तीन खाने बने हैं। कौन सी बात किस समय में थी, छांट कर भरो -

पशुपालक आर्य	छोटे जनपद	महाजनपद

खेती, मंत्री, गाय के लिए युद्ध, सेना, गांव, शहर, राजन्य, सिक्के, बलि, व्यापारी, जनपद, लिखाई, चारे की तलाश में घूमना, बलि का कानून, कई कारीगर, गणसंघ, वेद ।

5. क) यहां कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से दो बातें छांटो जो रंगू की कहानी की मुख्य बातें हैं-

● रंगू पानी भरने का काम करता था। ● रंगू ने गाड़ीवान से बातें कीं। ● रंगू गरीब था। ● बाज़ार की चीज़ें इतनी मंहगी थीं कि रंगू कुछ नहीं खरीद पाया। ● रंगू ने कसेरे के यहां बर्तन साफ किए।

ख) यहां महाजनपद के नगरों की दो मुख्य बातें लिखी हुई हैं। तुम ऐसी दो-तीन और मुख्य बातें लिखो -

- नगरों में बड़े बाज़ार थे जिनमें कई चीज़ों की दुकानें थीं।
- नगरों में सिक्कों से व्यापार होता था।
-
-
-

6. आज के नगरों की कौन सी समस्याएं तुम्हें महाजनपदों के महानगरों में मिलीं?

7. क) महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वर्णन पूरा करते हुए 6-7 वाक्य लिखो – *'चित्र में एक बहुत बड़ा महल और दूसरी बड़ी इमारतें दिख रही हैं। महल की दीवारें ऊंची हैं और उनमें .....*

ख) इस चित्र और पृष्ठ 74 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर हैं ?

8. तुमने सिंधु घाटी के शहरों के बारे में पढ़ा था। उन शहरों और महाजनपद के महानगरों में क्या समानताएं दिखीं और क्या अंतर दिखे? इन बातों की तुलना करो -

	सिंधु घाटी के शहर	महाजनपद के महानगर
क. शहर किन नदियों के किनारे बसे थे ख. शहरों में किन-किन चीज़ों का व्यापार होता था ग. लिखाई घ. व्यापार में सिक्कों का उपयोग ङ. कारीगर		